drishti | दृष्टि The Vision

515

हिन्दी साहित्य

टेस्ट-14

(प्रश्न पत्र-II)

DTVF / OPT-24 **HL-2414**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time Allowed: Three Hours

अधिकतम अंक : 250
Maximum Marks : 250

नाम (Name): आनंद कुमार मीना

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): ____________

ई-मेल पता (E-mail address): ____________

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): Test-14 09.09.24

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2024] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2024]:

0	8	2	5	6	6	3

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

drishti | दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

खण्ड - क

1. **निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या कीजिये: $10 \times 5 = 50$**

(क) चोट सताँणीं बिरह की, सब तन जरजर होइ।

मारणहारा जाँणि है, कै जिहिं लागी सोइ।।

संदर्भ व प्रसंग

श्याम सुंदर दास द्वारा संकलित 'कबीर ग्रंथावली' के 'विरह को अंग' से उद्धृत काव्य पंक्तियां में कबीर विरहणी की ईश्वर के साथ एकाकार की करुण पुकार को अभिव्यक्त किया है।

भावार्थ एवं विशेषार्थ

कबीर लिखते हैं विरह की चोट से विरहणी का शरीर जर्जर हो गया है मरनेवाले को ही पता होता है कि जीने की कीमत क्या होती है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

काव्यगत ~~वैशिष्ट्य~~ वैशिष्ट्य

1. रहस्यवादी चिंतक कबीर ब्रह्म एवं जीव के बीच भेद का कारण माया को मानते हैं।

2 विरह का रहस्यवादी भाव जायसी के 'पद्मावत' में भी दिखता है लेकिन वहाँ गार्हस्थिक प्रेम के विरह का भाव अधिक है।

3. उत्प्रेक्षा अलंकार → कै जिहि लागी

4. सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग हुआ है।

5. प्रतीकात्मक भाषा

6. "सब तन जरजर होई" में दृश्य बिंब

(ख) सायक-सम मायक नयन, रंगे त्रिविध रंग गात।
झखौ विलखि दूरि जात जल, लखि जल-जात लजात।।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ एवं प्रसंग

जगन्नाथ दास रत्नाकर द्वारा संकलित 'बिहारी रत्नाकर' से उद्धृत व्याख्येय दोहा बिहारी की सौंदर्य वर्णन दृष्टि का प्रमाण है इन पंक्तियों में बिहारी नायिका का सौंदर्य वर्णन कर रहे हैं।

भावार्थ एवं विशेषार्थ

बिहारी दरबारी कवि हैं अत: नायिका के शारीरिक लक्षणों का वर्णन दरबारी प्रशंसा हेतु करते हुए लिखते हैं कि काजल से भरे नयन और विभिन्न रंगों से ~~सब~~ रंगी गात आकर्षण पैदा करती है। साथ दृष्टि पड़ने पर

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

नायिका शर्मा जाती है

रचनात्मक सौंदर्य

(1) सौंदर्य वर्णन की उत्कृष्ट कुशलता है ब्रज भाषा को अखिल भारतीय स्तर की भाषा बना दिया था

(2) "सतसैया के दोहरे" वाला भाव यहाँ दृष्टिगोचर हो रहा है

(3) अनुप्रास अलंकार → सायक सम मायक

(4) दृश्य बिंब एवं स्पर्श बिंब से बना संश्लिष्ट बिंब - रंगे विविध रंग गात

(5) काव्य में आनंदवादी मनोरंजक दृष्टिकोण उभरा है

(6) वर्तमान संदर्भ में कास्मेटिक उत्पादों के प्रचार से महिलाओं का वाणिज्यीकरण एवं वस्तुकरण इसी के समान भाव प्रस्तुत करता है

(ग) सोइ रावन कहुँ बनी सहाई। अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई।।
अवसर जानि बिभीषनु आवा। भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा।।
पुनि सिरु नाइ बैठ निज आसन। बोला बचन पाइ अनुसासन।।
जौं कृपाल पूँछिहु मोहिं बाता। मति अनुरूप कहौं हित ताता।।
जो आपन चाहै कल्याना। सुजसु सुमति सुभ गति सुख नाना।।
सो पर नारि लिलार गोसाईं। तजउ चउथि के चंद कि नाईं।।
चौदह भुवन एक पति होई। भूतद्रोह तिष्टइ नहिं सोई।।
गुन सागर नागर नर जोऊ। अलप लोभ भल कहइ न कोऊ।।
दोहा: काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ।
सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिं जेहि संत।।

संदर्भ एवं प्रसंग

मध्यकालीन युग स्रष्टा एवं युग द्रष्टा लोकनायक कवि तुलसीदास के महाकाव्य 'रामचरितमानस' के 'सुंदर कांड' खंड से उद्धृत चौपाई व दोहे में विभीषण द्वारा रावण को ~~[illegible]~~ नैतिकता का मार्ग अपनाने का सुझाव प्रेषित हुआ है।

भावार्थ एवं विशेषार्थ

विभीषण रावण से कहते हैं कि अभी भी वक्त है, अगर अपना कल्याण चाहते हो तो सीता को मुक्त

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

कर प्रभु राम से क्षमा मांग लो। काम, क्रोध, मद व लोभ नरक ले जाने का माध्यम है जबकि प्रभु राम का स्मरण संत मार्ग पर ले जाता है।

रचनात्मक सौंदर्य

1. संस्कृतनिष्ठ अवधी
2. अलंकार -
   अनुप्रास - "बोला बचन पाइ —"
   उत्प्रेक्षा - जौं कृपाल पूँछिहु —
3. भाषा में लयात्मकता है।
4. 'सुमिरण भक्ति' भाव परिलक्षित हुआ है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(घ) बिलग जनि मानहु, ऊधो प्यारे!

वह मथुरा काजर की कोठरि जे आवहिं ते कारे।।

तुम कारे, सुफलकसुत कारे, कारे मधुप भँवारे।

तिनके संग अधिक छबि उपजत, कमलनैन मनिआरे।।

मानहु नील माट तें काढ़े लै जमुना ज्यों पखारे।

ता गुन स्याम भई कालिंदी सूर स्याम गुन न्यारे।।

संदर्भ एवं प्रसंग

आचार्य शुक्ल द्वारा संकलित 'भ्रमरगीत सार' से उद्धृत पद को कृष्णभक्तकवि सूरदास द्वारा रचा गया है। इन पंक्तियों में गोपियाँ ऊधो को मथुरा व कृष्ण के संबंध उपालंभ प्रेषित कर रही हैं।

भावार्थ एवं विशेषार्थ

गोपियाँ कहती हैं यह मथुरा काजल की कोठरी के समान है, यहाँ से जो आता है सब काले हैं और उनका मन भी काला है। ऐसा लगता है यमुना में धोकर निकलने के बाद भी कोई अंतर नहीं दिखा पड़ा है।

drishti दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

काव्यगत वैशिष्ट्य

1. ब्रज भाषा
2. छंद - पद
3. अलंकार -

अनुप्रास, उपमा - यह मथुरा काजर ---

रूपक -> कमलनैन मनिआरे

4. दृश्य बिंब - मानहु नील माट तें —
5. प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग
6. गोपियों के कथनों में वक्रता आ गई है

(ङ) आनन्ददात्री शिक्षिका है सिद्ध कविता-कामिनी,
है जन्म से ही वह यहाँ श्रीराम की अनुगामिनी।
पर अब तुम्हारे हाथ से वह कामिनी ही रह गई,
ज्योत्स्ना गई देखो, अँधेरी यामिनी ही रह गई!

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ एवं प्रसंग

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी 'भारत-भारती' (1912 ई.) कविता में अतीत का विश्लेषण वर्तमान के लिए नए आदर्श ढूंढने हेतु किया है। व्याख्येय पंक्तियों में यही भाव प्रस्तुत कर रहे हैं।

भावार्थ एवं विशेषार्थ

गुप्तजी तत्कालीन भारतीय समाज में शिक्षा के पतन पर क्षोभ प्रकट करते हुए लिखते हैं कि प्राचीन काल में शिक्षा का स्तर उच्च था और शिक्षा की ज्योति के पतन के कारण ही

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

भारत में चहुँ ओर अँधेरा व्याप्त हो गया है

रचनात्मक सौंदर्य

(1.) नवजागरण से ओत-प्रोत काव्य है

(2) सवैया छंद का प्रयोग।

(3) पुनरुत्थानवाद के प्रभाव के कारण तत्समबाहुल्य ~~खा~~ खड़ी बोली का प्रयोग।

(4) अनुप्रास अलंकार -> "कविता - कामिनी

(5) ~~प्रतीक~~ अभिधात्मकता, इतिवृत्तात्मकता का गुण भाषा में दिखता है।

2. (क) 'फूल मरै पै मरै न बासू'- इस कथन के संदर्भ में पद्मावत की काव्य-वस्तु का विवेचन कीजिए। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

जायसीकृत 'पद्मावत' सूफी प्रेमाख्यान काव्यधारा की सर्वोत्कृष्ट कृति है। 'पद्मावत' के माध्यम से जायसी ने प्रेम तत्त्व के मूल्य को सर्वोपरी स्तर पर परिनिष्ठित किया है।

जायसी की 'पद्मावत' में प्रेम साधन न होकर साध्य है। वे प्रेम में शामिल प्रेमी व प्रेमिका को बैकुंठ के स्तर पर न ले जाकर प्रेम को ही बैकुंठ बना देते हैं। यथा -

"मानुष प्रेम भए बैकुंठी
नाहिं तो का छार एक मूठी।"

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

एक तरफ अलाउद्दीन हिंसा के बल पर पद्मावती पर कब्जा करना चाहता है तो दूसरी ओर नागमती अपने पति के प्रेम में सर्वस्व न्यौछावर करने को तैयार है।

नागमती कहती है कि –

'यह तन जारों छार कै कहौ कि पवन उड़ाव,
मकु तेहि मारग उड़ि परै कंत धरैं जहँ पाँव।"

अर्थात् मेरे शरीर को जलाकर राख को उस मार्ग पर बिछा दो जिससे मेरे प्रिय आने वाले है। वहीं दूसरी ओर अलाउद्दीन

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

हीं के हाथ केवल पद्मावती की राख ही लगती है।

जायसी लिखते हैं कि जिस तरह फूल के मरने के बाद भी उसकी सुगंध हमेशा के लिए रह जाती है, उसी तरह मानव भी मृत्यु के बाद राख बन जाता है लेकिन उसके गुणों एवं कर्मों की महक बची रह जाती है।

'पद्मावत' में 'नागमती का विरह' तो उन उच्च आदर्शों को प्राप्त करता है जिसके कारण आचार्य शुक्ल को ही कहना पड़ा कि - नागमती का विरह वर्णन हिंदी

साहित्य की अद्वितीय वस्तु है।"

कहना न होगा कि जायसी ने 'पद्मावत' की रचना कर प्रेम को मूल्य के रूप में स्थापना की है। यह वही प्रेम है जो शारीरिक भोग के लिए न होकर आत्मा के स्तर पर पूर्णता प्राप्त करता है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(ख) "'भ्रमरगीत' में वचन की भाव प्रेरित वक्रता द्वारा प्रेम-प्रसूत अंतर्वृत्तियों का उद्‌घाटन परम मनोहर है।" उदाहरण सहित मीमांसा कीजिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

सूर में जितनी सहृदयता व भावुकता है उतनी ही चतुरता एवं वाग्विदग्धता भी। ये सभी गुण 'भ्रमरगीत' में स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुए हैं।

भ्रमरगीत में कृष्ण के मथुरा जाकर बसने एवं कुब्जा संग रहने की अफ़वाहों ने गोपियों का हृदय भेद दिया है उसी कारण गोपियाँ नाराज़ बैठी हैं।

जब ऊधो उनको सगुण भक्ति का पाठ पढ़ाने आते हैं तो उनका धैर्य जवाब दे देता है और वे अपनी भावनाओं की तीव्रतम अभिव्यक्ति करती हैं। इस भाव

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti दृष्टि The Vision

(ये) के मूल में प्रेम छिपा है लेकिन आक्रोश के कारण वाणी मे वक्रता आ गई है।

वे ऊधो से कहती हैं–

"ऊधो भली करी तुम आयो वे बातें कही कहाँ या ब्रज के लोग हँसायो।"

जब ऊधो जब उन्हें योग का पाठ पढ़ाते हैं तो वे कहती हैं–

'ऊधो कोकिल कूजत कानन तुम हमको उपदेश करत हो, भस्म लगावत आनन।"

और वे कृष्ण के प्रति अपने भाव भी वक्रता के

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

साथ प्रस्तुत करती है—

'हरि हैं राजनीति पढ़ आए,
एक अति चातुर पहले ही,
अरु करि नेह दिखाए।'

कुब्जा के प्रति उपालंभ करते हुए वे कहती हैं:—

'आपुन केलि करत कुब्जा संग
हमहिं सिखावत जोग।'

भावों की तीव्रता में वे प्रकृति पर भी उपालंभ करती है—
मधुबन तुम कत रहत हरे,
विरह वियोग श्याम सुंदर के ठाढ़े क्यों न जरे।

इस प्रकार भ्रमरगीत सार में सूर ने भावप्रेरित वक्रता के माध्यम से गोपियों के कृष्ण के प्रति अपार प्रेम को ही अभिव्यक्त किया है।

(ग) शक्ति-काव्य के प्रतिमान के रूप में 'राम की शक्ति-पूजा' पर विचार कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

राम की 'शक्ति-पूजा' में निराला ने पौराणिक कथानक के माध्यम से आधुनिक भावों को प्रस्तुत किया है।

डॉ. निर्मला जैन जैसी समीक्षक मानती हैं कि यह कविता शक्तिकाव्य का प्रतिमान है। सामान्यतः छायावादी कवियों पर यह आक्षेप लगाया जाता है कि वे निराशा का काव्य रचित करते हैं। लेकिन 'राम की शक्ति-पूजा' निराशा, पराजयबोध से भरे मानव के समक्ष शक्ति के आह्वान का मार्ग सुझाती है।

drishti दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

राम बार-बार मिलती हार से निराश होने लगते हैं -

'फिर खिंचा न धनु, बंधा मैं,
हुआ त्रस्त ---।"

लेकिन जाम्बवान उनके सामने दृढ़ आराधना के द्वारा शक्ति अर्जन का मार्ग बताते हैं -

"आराधन का दृढ़ आराधन से दो तुम उत्तर
तुम करो विजय संयत प्राणों से प्राणों पर।"

राम निराश हैं लेकिन हारे नहीं हैं -

'वह एक और मन रहा राम का जो
न थका,
जो नहीं जानता दैन्य नहीं जानता विनय'

यहाँ तक कि अंत में

शक्ति द्वारा कमल छिपा लेने पर आत्मोत्सर्ग हेतु तैयार हो जाते हैं।

तब शक्ति प्रकट हो उन्हें आशीर्वाद देती है-

"होगी जय, होगी जय
हे पुरुषोत्तम नवीन,
कह राम के वदन में शक्ति
हुई लीन।"

प्रकारांतर से यह गाँधीजी के स्वतंत्रता संग्राम में शक्ति की मौलिक कल्पना का पाठ पढ़ाते हैं।

इन्हीं कारणों से उस कविता को शक्तिकाव्य कहा गया है और सुमित्रानंदन पंत ने निराला को 'ज्योति का कवि' कहा है।

3. (क) कामायनी में अंतर्निहित प्रसाद के जीवन-दर्शन पर बौद्ध-दर्शन, विकासवाद, मार्क्सवाद और मनोविश्लेषणवाद के प्रभाव का उद्घाटन कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

प्रसादकृत 'कामायनी' पौराणिक कथा में आधुनिक मूल्यों को धारण करती है इन आधुनिक मूल्यों एवं भावों के विश्लेषण में अनायास ही प्रसाद का दार्शनिक चरित्र प्रतिबिंबित हुआ है।

सर्वप्रथम बौद्ध दर्शन की चक्रीय अवधारणा एवं प्रतीत्य समुत्पाद का प्रभाव ग्रन्थ 'कामायनी' में स्पष्टतः दिखता है। प्रतीत्य समुत्पाद के तात्पर्य है एक वस्तु के होने पर दूसरी अन्य वस्तु का निर्माण।

'कामायनी' में भी देव सभ्यता का पतन मनु के समक्ष पुनः नवनिर्माण का अवसर लाता है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

इसी प्रकार श्रद्धा के माध्यम से बौद्ध दर्शन की 'कर्म की अवधारणा' भी अभिव्यक्त हुई है जिसके अनुसार नैतिक कर्म का फल शुभ होता है। श्रद्धा 'कामायनी' में उसी शुभ का प्रतीक है।

इसके अलावा डार्विन के विकासवाद से प्रभावित 'उत्तम-जीविता' के सिद्धांत का प्रभाव भी कामायनी में दिखता है।

देव सभ्यता के पतन के पश्चात वही लोग जीवित बचे हैं जो श्रेष्ठ हैं। प्रसाद लिखते हैं-

"स्पर्धा में जो उत्तम ठहरें, रह जावें
संसृति का कल्याण करें, शुभ मार्ग बतलावें।"

अगले स्तर पर मार्क्सवाद का प्रभाव भी दिखता है। मार्क्सवाद असमानता के वितरणजनित अन्याय का परिणाम मानता है यही भाव "कामायनी" में भी दिखता है। मार्क्सवाद सर्वसुखवाद पर बल देता है यही बात इड़ा के उद्‌बोधन में झलकती है यथा—

"औरों को हँसते देखो मनु, और सुख पाओ
अपने सुख को विस्तृत कर लो, सबको सुखी बनाओ।"

साथ ही फ्रॉयड के मनोविश्लेषणवाद का प्रभाव भी 'कामायनी' में स्पष्टतः परिलक्षित हुआ है। फ्रॉयड का काम-चेतना सिद्धांत मनु के इड़ा के प्रति व्यवहार

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

में देखा जा सकता है जब वह कामुक हो कर इड़ा के साथ सुख प्राप्ति का प्रयास करता है।

इसके अतिरिक्त जैन धर्म का अहिंसावाद भी 'कामायनी' में दृष्टिगोचर होता है—

"ये प्राणी जो बचे हुए हैं, इस अचला जगती के
उनके कुछ अधिकार नहीं क्या ये हैं सब फीके।"

कहना न होगा कि 'कामायनी' में प्रसाद ने विभिन्न पाश्चिमी एवं भारतीय दर्शनों के सामंजस्य से आधुनिक मानव के समक्ष नए आदर्शों का निर्माण किया है।

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) 'असाध्य वीणा' के आधार पर अज्ञेय की काव्य-भाषा पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

'असाध्य वीणा' वर्ष 1961 में रचित, अज्ञेय की काव्य क्षमता को प्रमाणित करने वाली कृति है। अज्ञेय ने 'सर्जना की क्षमता', 'सर्जना की प्रक्रिया' एवं 'सर्जना के प्रभाव' आदि के विश्लेषण के प्रयास में 'असाध्य-वीणा' में नए शैल्पिक प्रतिमान गढ़े हैं।

'असाध्य-वीणा' में अज्ञेय अभिजात्यवादी भाषा-दृष्टि प्रखर रूप से प्रस्तुत हुई है। इस दृष्टि के कारण इस कविता में तत्सम् बाहुल्य शब्दावली का प्रयोग हुआ है यथा -

"सब डूबे एक साथ
एकाकी पार तिरे"

लेकिन कविता की बोधगम्यता निरंतर बनी हुई है भाषिक संरचना सरल होने के कारण पाठक तक कथ्य की पहुँच उचित रूप में हुई है

साथ ही अज्ञेय कहीं-कहीं इस अभिजात्यवादी दृष्टि का अतिक्रमण भी करते हैं उदाहरणत:

" अपने अंतस का
आलोक जगा
तू गा, तू गा ... तू गा।"

अज्ञेय की भाषा कहीं अभिधात्मकता का गुण लिए है तो कहीं लक्षणात्मकता का अभिधात्मक का उदाहरण –

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

लक्षणा का उदाहरण ->

" आँख मूँद, प्राण खींच
करके प्रणाम
अनछुए छुअन के छुए तार।"

अज्ञेय भाषा में शब्दों की पुनरावृत्ति के द्वारा नाटकीयता का समावेशन करते हैं तो दूसरी ओर प्रतीकों के माध्यम से कथ्य का संप्रेषण करते हैं। यथा -

शिशु को पालने में सुलाए
मुग्धा माँ ....

निष्कर्षत: 'असाध्य वीणा' जिस स्तर पर संवेदना के नए आयाम निर्मित करती है उसी स्तर पर भाषा की उत्कृष्टता के आदर्श भी गढ़ती है

(ग) निराला अपने समय की आवश्यकतानुसार प्रसंग का चयन, प्रसंग का विस्तार तथा प्रसंग की व्याख्या करते हैं। क्या निराला की यह विशेषता राम की शक्तिपूजा में भी दृष्टिगत होती है? विवेचन करें। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

निराला प्रयोगशील कवि हैं और इसी कारण अपने काव्य में प्रयोगशीलता को धारण करने के क्रम में विभिन्न प्रसंगों का चयन कर भिन्न-भिन्न प्रकार से उसकी व्याख्या करते हैं।

'रामशक्तिपूजा' में जहाँ 'शक्तिपूजा' का प्रसंग चुन निराला आधुनिक मानवमन में निहित निराशा, पराजयबोध एवं हताशा को उजागर करते हैं वहीं इसी और 'कुकुरमुत्ता' में बौनाग्रंथि से भरे कुकुरमुत्ता के माध्यम से पूँजीवादी गुलाब के समक्ष साधारण की सार्थकता को स्थापित

करते हैं।

'राम की शक्तिपूजा' में 'शक्ति पूजा' के प्रसंग का विस्तार करते समय वे हनुमान की शक्ति के भी दर्शन करवाते हैं ताकि यह साबित कर सकें कि 'शक्ति की मौलिक कल्पना' के अभाव उपलब्ध विकल्प क्यों प्रासंगिक नहीं हैं।

प्रसंग की व्याख्या करते समय निराला ने जाम्बवान के माध्यम से राम को अपनी पराजय ~~को पहचानने~~ के कारणों को पहचानने का मार्ग प्रेषित करवाया है। समस्या है कि - अन्याय है जिधर

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

है उधर शक्ति'। लेकिन यहाँ जाम्बवान राम को सफलता का मार्ग भी बतलाते हैं –

"आराधन का दृढ़ आराधन से दो तुम उत्तर करो विजय संयत प्राणों से प्राणों पर।।"

इसी कारण राम का मन उत्साह से संपृक्त हो सकता है –

एक और मन रहा राम का जो न थका, जो नहीं जानता दैन्य नहीं जानता विनय।

इसी व्याख्या के क्रम में अंत में –

होगी जय, होगी जय हे पुरुषोत्तम नवीन कह, शक्ति, राम के बदन में हुई लीन।

वस्तुतः निराला की इसी प्रयोगशीलता ने उन्हें अंधकार के काल से निकलकर 'ज्योति के कवि' के रूप में प्रतिष्ठित किया।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

4. (क) 'असाध्य वीणा' कविता का संदर्भ लेते हुए 'व्यक्ति और समाज' के अंतर्संबंध के संबंध में अज्ञेय के विचारों का अन्वेषण कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti
दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti
दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) 'भारत-भारती' के आधार पर मैथिलीशरण गुप्त की भविष्य-दृष्टि पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) 'प्रगतिवादी जीवनमूल्यों में आस्था रखते हुए भी मुक्तिबोध 'लकीर के फकीर' नहीं हैं और अनुभवजन्य यथार्थ पर अधिक यकीन रखते हैं।' ब्रह्मराक्षस कविता के संदर्भ में इस कथन पर विचार कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

खण्ड - ख

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या कीजिये: **10 × 5 = 50**

(क) जब आप याद करेंगे कि मुगल बादशाहों के ज़माने में इन कोल किरातों का आखेट होता था और जो पकड़े जाते थे, वे काबुल में बेच दिए जाते थे और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के शासन में लाखों की तादाद में उन्हें जरायम पेशा करार दिया गया, तब तुलसीदास की प्रगतिशीलता समझ में आएगी।

संदर्भ एवं प्रसंग

सत्येंद्र द्वारा संकलित पुस्तक 'निबंध - निलय' के निबंध 'तुलसी साहित्य में सामंतवादी विरोधी मूल्य' के व्याख्येय पंक्तियाँ उद्धृत हैं। इसमें रामविलास शर्मा तुलसी की प्रगतिशीलता को समझने के लिए मुगलकालीन वानगीतिक विडंबना का उदाहरण दे रहे हैं।

व्याख्या

रामविलास शर्मा कहते हैं कि जिस मध्यकाल में कोल किरातों का शिकार एवं व्यापार किया जाता था उस समय में तुलसी द्वारा

वंचित वर्ग का पक्ष लेना उनकी प्रगतिशीलता का द्योतक है।

विशेष

(1) रामविलास शर्मा मार्क्सवादी समीक्षक है। इसी कारण से वंचित व शोषित वर्ग की पीड़ा समझने के लिए तुलसी को प्रगतिशील मानते हैं।

(2) तार्किक निबंध शैली

(3) भाषा में एक आक्रोश दिखता है जो संवेदना की अभिव्यक्ति के लिए वांछनीय है।

(4) यही भाव नागार्जुन के काव्य में भी दिखता है जहाँ वे तत्कालीन राजनीतिक तंत्र के प्रति आक्रोश व्यक्त करते हैं-

सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।

(ख) हमारा सृष्टि-संहार-कारक भगवान् तमोगुणजी से जन्म है। चोर, उलूक और लंपटों के हम एकमात्र जीवन हैं। पर्वतों की गुहा, शोकितों के नेत्र, मूर्खों के मस्तिष्क और खलों के चित्त में हमारा निवास है। हृदय के और प्रत्यक्ष, चारों नेत्र हमारे प्रताप से बेकाम हो जाते हैं। हमारे दो स्वरूप हैं, एक आध्यात्मिक और एक आधिभौतिक जो लोक में अज्ञान और अंधेरे के नाम से प्रसिद्ध हैं।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ एवं प्रसंग

भारतेंदु ने 'भारत - दुर्दशा' (1875 ई.) नाटक में नवजागरण के भाव जागृत करने हेतु अमूर्त तत्वों का मानवीकरण किया है। व्याख्येय पंक्तियाँ 'अंधकार' नामक चरित्र द्वारा खुद के परिचय के संदर्भ में कही हैं।

व्याख्या

अंधकार कह रहा है कि विश्व की सभी बुराइयाँ मेरे ही सानिध्य में हो रही हैं। प्रतीकात्मक अर्थ में मध्यकालीन बुद्धिजीवी वर्ग की अश्लील रहस्यता ही अंधकार के रूप में इस नाटक में मौजूद

है अज्ञानता का यह वातावरण ही समस्त बुराइयों की जड़ है।

विशेष

(1) आरंभिक खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है।

(2) तत्सम युक्त भाषा का प्रयोग। उदाहरण - तमोगुणजी, आधिभौतिक

(3) व्यंग्यात्मक भाषा

(4) प्रतीकात्मक भाषा

(5) नवजागरण हेतु कटाक्ष किया गया है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(ग) कोई पीछे नहीं है, यह बात मुझमें एक अजीब किस्म की बेफिक्री पैदा कर देती है। लेकिन कुछ लोगों की मौत अन्त तक पहेली बनी रही है; शायद वे जिन्दगी से बहुत उम्मीद लगाते थे। उसे ट्रैजिक भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि आखिरी दम तक उन्हें मरने का अहसास नहीं होता।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ एवं प्रसंग

निर्मला वर्मा की 'परिंदे' कहानी से उद्धृत गद्यांश का संकलन राजेन्द्र यादव ने 'एक दुनिया समानांतर' कहानी-संग्रह में किया है। इन पंक्तियों में मिस्टर मुकर्जी अकेलेपन के दोहरे निहितार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं।

व्याख्या

मिस्टर मुकर्जी म्यांमार से दूर शिक्षक बनकर आए हैं और पत्नी के स्वर्गवास के बाद से अकेले हैं। वे शहरी मध्यवर्गीय लोगों की निरर्थकतापूर्ण ज़िंदगी और मृत्यु के संबंध को उजागर कर रहे हैं।

वे कहते हैं अकेले होना एक तरफ स्वतंत्रता लाता है लेकिन दूसरी तरफ यह पीड़ादायक भी रहता है।

विशेष

1. नई कहानी आंदोलन के शुरुआती दौर की कहानी है।
2. लघुमानववाद की अवधारणा प्रस्तुत हुई है।
3. 'मृत्यु का दर्शन' आधुनिक संदर्भों में अभिव्यक्त हुआ है।
4.

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(घ) संसार से तटस्थ रह कर शांति-सुखपूर्वक लोक-व्यवहार-संबंधी उपदेश देने वालों का उतना अधिक महत्त्व हिन्दू धर्म में नहीं है जितना संसार के भीतर घुस कर उसके व्यवहारों के बीच सात्विक विभूति की ज्योति जगाने वालों का है। हमारे यहाँ उपदेशक ईश्वर के अवतार नहीं माने गए हैं। अपने जीवन द्वारा कर्म-सौंदर्य संघटित करने वाले ही अवतार कहे गए हैं।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

निबंध एवं प्रसंग

वर्ष 1939 ई. में प्रकाशित निबंध-संकलन 'चिंतामणि' के निबंध 'श्रद्धा-भक्ति' के व्याख्येय पंक्तियाँ ली गई हैं जिनकी रचना हिंदी निबंध विधा के पुरोधा निबंधकार आचार्य शुक्ल ने की है।

व्याख्येय पंक्तियों में आचार्य शुक्ल भारतीय समाज में 'लोकमंगल की अवधारणा' का महत्त्व बता रहे हैं।

व्याख्या

आचार्य शुक्ल कहते हैं कि भारतीय समाज में उपदेशकों के अधिक महत्त्व समाज-सुधारकों का रहा है। वे आगे लिखते हैं

कि राम और कृष्ण की ईश्वर के रूप में प्रसिद्धि का कारण उनके लोकमंगल के कार्य हैं।

विशेष

1. तत्समबाहुल्य भाषा लेकिन वाक्य विधान सरल है।

2. गूढ़ तार्किक चिंतन अभिव्यक्त हुआ है।

3.

(ङ) इसे ले तो जा रहा हूँ, पर इतना कहे देता हूँ, आप भी समझा दें उसे- कि रहना हो तो दासी बनकर रहे। न दूध की, न पूत की। हमारे कौन काम की, पर हाँ, औरतिया की सेवा करे, उसका बच्चा खिलावे, झाड़ू, बुहारु करे तो दो रोटी खाय, पड़ी रहे। पर कभी उससे ज़बान लड़ायी तो खैर नहीं। हमारा हाथ बड़ा ज़ालिम है। एक बार कूबड़ निकला, तो अगली बार प्रान ही निकलेगा।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ एवं प्रसंग

नए दौर की कहानियाँ मध्यवर्गीय एवं शहरी नारी के विडंबनात्मक जीवन के यथार्थ को बखूबी प्रस्तुत करती हैं। धर्मवीर भारती की कहानी 'गुलकी बन्नो' से ली गई पंक्तियों में भी यही भाव उजागर हो रहा है।

व्याख्या

भौतिकतावाद के दौर में दिव्यांग महिलाओं को अन्याय का सामना करना पड़ता है। गुलकी बन्नो का पति उस पर अत्याचार करता है और पीटकर अपने घर भेज देता है। वापस ले जाने

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

हेतु शर्त रखता है कि अगर यह उसकी इसरी पत्नी की सेवा कर सके तो ही वह उसे ससुराल ले कर जाएगा।

विशेष

(1) घरेलू हिंसा आज भी समाज के समक्ष बड़ी समस्या बनी हुई है।

(2) NCRB के अनुसार 70% महिलाएँ किसी न किसी तरह से हिंसा का शिकार होती हैं।

(3) पुरुषप्रधानता एवं पितृसत्तात्मकता परिलक्षित हो रही है।

(4) आधुनिक नारी भी द्रौपदी (यज्ञपाल) की तरह कहीं भी सुरक्षित नहीं है।

6. (क) हिंदी की आंचलिक-उपन्यास-परंपरा में 'मैला आँचल' का स्थान निर्धारित कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti
दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti
दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) 'स्कंदगुप्त' नाटक के परिप्रेक्ष्य में प्रसाद के नारी चरित्रों के स्वरूप एवं महत्ता पर विचार कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti
दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti
दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) क्या 'महाभोज' उपन्यास का नामकरण उसके कथ्य के साथ न्याय कर पाता है? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti
दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti
दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

7. (क) कथा के धरातल पर ऐतिहासिक होते हुए भी स्कंदगुप्त क्यों एक आधुनिक नाटक है? तार्किक उत्तर दीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti
दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) प्रेमचंद की कहानी 'सद्गति' दलित-प्रश्न को उठाने में कहाँ तक सफल सिद्ध हुई है? विवेचनात्मक उत्तर दीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) रंगमंचीयता के धरातल पर 'भारत-दुर्दशा' और 'स्कंदगुप्त' की तुलना कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti
दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

8. (क) भारत के संपूर्ण गाँवों का प्रतिनिधित्व करता 'मेरीगंज' जिस रूप में 'मैला आँचल' में व्यक्त हुआ है, वह रूप गांवों की नारकीय स्थिति और जन-चेतना के दुष्प्रभावों का कलात्मक यथार्थ है।' इस मत के परिप्रेक्ष्य में 'मैला आँचल' उपन्यास का परीक्षण कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

यूं तो फणीश्वरनाथ रेणु ने 'मैला आँचल' को आंचलिक उपन्यास घोषित किया है लेकिन सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर 'मेरीगंज' भारत के लगभग हर गाँव का प्रतिनिधित्व करता है।

'मैला आँचल' वर्ष 1954 में लिखा गया उपन्यास है लेकिन इसमें स्वतंत्रता के पूर्व कुछ वर्षों से लेकर कुछ वर्ष बाद के भारत का चित्रण है।

स्वतंत्रता के बाद भारतीय ग्राम राजनीतिक रूप से तो स्वतंत्र हो गए थे लेकिन विभिन्न सामाजिक विडंबनाएँ

पूर्व की तरह विद्यमान रही। 'मेरीगंज' हर गाँव की तरह विभिन्न जातियों में बँटा है-

यहाँ भी चार जातियाँ हैं। राजपूत, कायस्थ एवं यादव। ब्राह्मण अभी भी तीसरी शक्ति है।

यह जातीय विभाजन हिंसा में परिवर्तित हो जाता है। यहाँ तक कि जनेऊ धारण कर संस्कृतीकरण हो जाने के बावजूद भी यादवों को उच्च स्थान नहीं मिल पाता।

साथ ही जनजातीय समुदायों का शोषण भी हर गाँव

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

की तरह मैरीगंज की भी वास्तविकता है संथालों की जमीन पर कब्जा करने के लिए संथालिनों का सामूहिक बलात्कार कर दिया जाता है।

वहीं दूसरी ओर जन-चेतना के नाम पर विभिन्न राजनीतिक समूह समाज को बाँट रहे हैं। दुलारचंद कापरा जैसे अपराधी कांग्रेस के नेता बन गए हैं तो दूसरी और काली टोपी वाले संघ संचालक अभी भी निम्न तबकों का समान दर्जा देने को तैयार नहीं है।

डॉ. प्रशांत भी अपनी रिसर्च में यही पाते हैं कि हर बीमारी के दो ही कारण हैं - गरीबी और जहालत।

वहीं इसरे डॉक्टर अपराधियों के साथ मिलकर समाज में लूटपाट कर रहे हैं।

इस प्रकार रेणु ने गाँवों की नारकीय स्थिति और जन-चेतना के दुष्प्रभावों का यथार्थपरक चित्रण किया है। उन्होंने प्राक्कथन में लिखा भी है-

'इसमें शूल भी है, फूल भी, काँटे भी है, गुलाब भी। मैं किसी से अपना दामन बचाकर नहीं निकल पाया।

(ख) यथार्थ-चित्रण की दृष्टि से 'महाभोज' उपन्यास की समीक्षा कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में इतिहास और कल्पना के समन्वय पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)